

कांग्रेस एमालेस' उबारै नै, माओवादी करए गोरधरिया

कतबो केहुना नजरि खिरौने एखन नेपाल जगतरमे कोनो राजनैतिक दल अमनियाँ नै देखाइ द' रहल अछि । भल किछुए मास पहिने छिमाइन छोड़क' एमाओवादीस' पुनटिक' बनल मोहन वैद्य नेतृत्वक नेकपा माओवादी पार्टीक खाँहिस अगिला सहमतिक राष्ट्रिय सरकारक नेतृत्व करब रहल अछि । सत्ता लिप्सा आ राजनैतिक भ्रष्टाचारीस' अमनियाँ अमच रह'बला वैद्य समूहके देखाउँस लागि गेल छै, सरकारमे जायके । संसदीय व्यवस्थाके विरोध करैत आएल ई नेतासब आव सरकारमे जाएलेल खरनाएल अछि, तकर पाछुक मनोविज्ञान कोनो राजनैतिक आवश्यकता बोधस' बेसी रकटल सत्ता लिप्सा त' नै अछि । राजनैतिक उपरौम्फक नव गोटी भँजैत पार्टी प्रवक्ता पंफा भुसाल अपन बकार फोड़ैत जनौलनि अछि, जे पाँच



बुन्ने सहमतिक आधारपर सहमतिके सरकार कांग्रेस वा एमालेके नेतृत्वमे बनिए नै सकैए आ एमाओवादी आ मधेशी मोर्चाक कामचलाउ सरकार थोस द' घुसकनियाँ कटि रहल अछि । आव धनमे धन अमनियाँ बचल रहि गेल नेकपा माओवादी

आ गोलमेच सम्मेलनक सहमतिस' बनएबला राष्ट्रिय सरकारके अगिलका नेतृत्व नेकपा माओवादीए करओ, एहन मनसूवा जगजाहेर कएलक अछि । इहो दल एहि बातके बिसरि रहल अछि जे सोमधरानी सहमति होएतै नै आ

एमाओवादी, कांग्रेस आ एमाले अपने राजनैतिक भोथरा मोटकूड़ी कहेत्या मार' चाहैत अछि । एहनमे पिरोटैन भेल राजनैतिक भौजाइके फखैन लागल छै— भतारस' उबार नै आ छोट दिऔर करए गोरधरिया, बला पैर कएने अइ ।

कला संस्कृतिक सांगीतिक राग-रंग विमर्श

सब समाज आ संस्कृति जकाँ मिथिलोके अपन विशिष्ट साहित्य कला आ संगीत छै आ एहिस' एकर अपन निछुन पहचान आ पहुँच बनै छै । कला आ संस्कृतिक समग्रतास' जे मानवीय दर्शन आ लोक जीवन पद्यति बनैछै ओकर मूल्य अपूर्व आ अनन्त होइत अछि । महान मैथिली कलाके अन्तर्गत साहित्य नाट्य आ संगीतक विस्तृत संसार समाहित अछि । मैथिली लोकसाहित्य आ चित्रकला, मूर्तिकलादिक प्रभाव आ पभुत्वक अपन मौलिक गरिमा आ महिमा छै । जीवनसंग कला निछुन आ निमनस' सम्बद्ध रहने मिथिलाक परम्परागत जीवनशैली आ संस्कृति संगीतात्मक राग-भावक लालित्यस' सरावोर अछि । एहि

हिसावे ई त' कहले जा' सकैछ जे मिथिलाक स्थायी सम्पति आ अकूत वैभव कला संगीतमे सेहो अछि । परम्परागत संस्कारक अनन्त लोकगीत छै आ प्रत्येक लोकगीतके अपन खास रागभास छै । सब राग-भासके फेरु अपन पहचान आ सौन्दर्यशास्त्र छै । आ जे छै से बेजोड़ आ विशिष्ट छै, सबके अपन लोक दर्शन आ परम्परागत पद्यति छै । एकर अटूट पद्यति लोकजीवन धारास' प्रवाहमान रहने एकर लालित्यके जीवनक राग-रंग बुझल जाइछ । परिवर्तन गतिशीलताक निशानी अछि आ समकालीन गहनतम परिप्रेक्ष्यमे साक्ष्यभावस' मनासिब चिन्तजस' ई बुझ'मे आवि रहल छै जे नव युगीन परिवर्तन आ विश्व संस्कृतिक विस्तारस' मिथिलाक जीवन-दर्शन आ

परम्परागत पद्यति खूब नीक जकाँ हिली-डोलिक' बहुत अंशमे हल्लुक आ सतही भ' गेल अछि । परिणाम स्वरूप एहिस' सरस जीवधाराक परम्परागत प्रवाह भट्ठरंग आ बेंटछुटू भ' रहल बातक उपराग अपने भरस' आवि रहल अछि । सुख, शान्ति आ सुपुक प्राप्तिकेलेल कला-संगीतक सौन्दर्यके आम आ अनिवार्य बनाबहि पड़तैक । सुदीर्घ सामाजिक सद्भाव, जीवन राग, सांस्कृतिक गरिमा आ प्रतिवद्धात्मक लोक निष्ठाभाव उत्पन्न कएनाइ, नव युगमे परम्परागत पद्यति आ मूल्यमान्यताके परिमार्जन सहित समायोजन कएनाइ सेहो ओहिना ओतवे आवश्यक अछि । नहि त' एकरा बिनु सम्पूर्ण संस्कृति आ पहचानक निजत्व

अलोपित भ' म्यूजियम भैलूक बन' जा रहल अछि आ बादमे एकरा चिन्ह'-जान' आ रसास्वादन लेल अध्ययनो - अनुसन्धान बेकाम भ' सकैए । महत्वपूर्ण गप्प एत' ई अछि जे एकरा के आ कतएस', के केना करए ? ई अमूल्य निधि सांस्कृतिक वातावरणक शुभ उपलब्धि अछि आ ई काज असलमे समाजे क' सकैत अछि । हँ एकर उद्बोधनात्मक चेतना जागरणके लेल संघ-संस्थाके संगहि सरकारी प्रयास लाभकारी अवश्य होएत । सामाजिक मूल्यहीनता आ सांस्कृतिक भटकनके लेल आन्दोलनी आयास-प्रयास जतए आवश्यक अछि ओतए आन्तरिक उत्प्रेरणा जागरण परम्परागत मूल्यमान्यता

वाँकी अन्तिम पृष्ठ पर

आलाप सांगीत विद्यालयक भूमिका उद्घाटन



आलाप सांगीतिक विद्यालय, जनकपुरधमक उद्घाटन समारोहमे मैथिलीक कहबैका बड़ैता आ बहुतो मुहगरहालोकनिक रागात्मक उपस्थितिमे उमेदगर बातसब जाँघ जोड़िक भेने ई कार्यक्रम बहुत दिन धरि लोके मोन रहतै । जतनमे जनकपुरक मन अछि तथापि ई त' मानहि पड़त जे एहि ठाम कतेक विद्यालय, महाविद्यालय अछि तकर जादात नहि, सरकारी विद्यालयके छोड़िक', खासक' नीजि विद्यालय वित्त आलयके विधि, प्रविधि आ लाभ-लोभस' खुजने ई सेवा शिक्षा उद्योगक वाजारीकरण बनि एकटा प्रवाहमे बहि जाइत अछि । संगीतकर्मि ललित कामतिक सत्प्रयासस' जे ई संगीत विद्यालय खुजल अछि ओ जनकपुर क्षेत्रमे सांगीतिक शिक्षाक बढ़का कमीके पुरन कएलक अछि ।

मल्लिक, नेहा प्रिय दर्शनी, मदन ठाकुर, आदि । प्राज्ञ रामभरोस कापड़ि भ्रमर सोभित राउतक एकर गायन कार्यक्रम करबाक संगहि अन्तराष्ट्रिय सांस्कृतिक सम्मेलन करबाक उद्घोषण करैत विश्वास दिऔलनि जे ओहिमे मैथिली नाट्य, कला संगीतसबके बेसीस' बेसी सहभागी बना प्रोत्साहित करबाक वचनबद्धता व्यक्त कएलनि जे सबके नीक लगलै । मिथिला महान आ जनकपुर पुज्य अछि से एहि दुआरे जे एतुका धर्म संस्कृतिमे सांगीतिक प्रवाह भरपूर अछि । प्रा. परमेश्वर कापड़ि साहित्य नाट्य आ कला-संगीतके उच्च आदर्श आ लोकजीवनमे एकर अहमियतके समीक्षात्मक टिप्पणी करैत कहलनि— सौभाग्यक बात अछि जे कला संगीतके क्षेत्रमे बहुतो संघ संस्था आ क्लवसब आगू आएल अछि आ नेपाल विद्यापति पुरस्कार कोष बहुत महत्वपूर्ण पुरस्कारसब ल'क' एकर रचनाधर्मिता आ सृजनशीलताके प्रोत्साहन देबाक लेल सक्रिय अछि । महत्वपूर्ण बात ई अछि जे रचनाधर्मिता आ सृजनशीलताक संग कला सांदर्य आ जीवन-दर्शन एवं मूल्यमान्यता साहित्य नाट्य आ संगीत एहि तीनूमे अछि ।

हिया हारल जनताके हिआओ संविधान कानूनसू बढतै



धर्मधकेल हुअ'बला अगिला चुनाव आव अगहन सात गतेमे नै होएब निश्चित अछि । निर्वाचन आयोग हिम्मति जुटाक' देलक अछि जे आवश्यक कानूनी आधार बेगर ई चुनाव भइए नै सकैए । एखन देशके आवश्यकता संविधान निर्माण आसंघीय संरचनाक विकास रहल होइतोमे सरकार

चुनावी अन्हरफौली मारि डा. भट्टराइ सरकार राजनैतिक गोटी बनाक' जे खुहखेला रहल छल, आव मुहंभरे चारुनाल चित खसने विपक्षीक पौह-वारह भेल अछि । कामचलाउ सरकार अपन राजनैतिक हेआओस' चुनावके तिकरमी गोटी भाँजि-भाँजि विपक्षके सिहाक' देह फाँफर करैत रहल बात आव नै रहलै ।

वाँकी अन्तिम पृष्ठ पर

समाचार विश्लेषण:-

राजनीतिमे नइ, साहित्य आ कलामे व्यंग्यात्मक गाईयात्रा छजैछ

विकृति आ विसंगति सुधारके सबस' नीक आ मजगूत औजार व्यंग्य अछि आ नेपाली समाज एकरा गाईयात्रा पर्वक रूपमे बखूबी निर्वाहि हल अछि । नेपाली संस्कृतिक लोक गाईयात्रा दिनके हास्य-व्यंग्य महोत्सवके रूपमे मनबैत आएल अछि । कहल जाइछ जे भक्तपुरक तत्कालीन राजा जगत्प्रकाश मल्ल अपन रानीके बेठाके निधनस' शोकाकुल भेला उत्तर ओकरा हँसएवा बजएवाक लेल अपन प्रजासबके एक दिन जे जेहन रुप धारणक' सकबाक छुट देलकनि आ तहिएस' नेपालमे गाईयात्राक परम्पराक शुरुआत भेल अछि । एखन आव गतवर्षमे मृत्यु भेल अपन लोकके यादमे, ओकर सखा सम्बन्धी सबके शोक मोचनके हिसावे एहि परम्पराके निर्वाह भ' रहल अछि । एकरा पाछा मानवीय सदासयता आ सहृदयताक तत्व प्रभावी भ'क' संचरित अछि । कारण स्वजनके मौगतिके एक बरखा पोसुवा शोकके रूपमे नियमे-निष्पे अरबसिक' मनौनेस' परिवारके, शोक ओहि अवधिमे, सबके पथरा देने रहैत छै ।

खल-खल हँसी आ मुस्कान अमोघ प्राकृतिक वरदान अछि आ सौंदर्यक सर्वोत्तम प्रसाधन एकरा मानल जाइछ । हँसी-कुस्कान सुखानन्दक जोड़गर जरिया अछि आ अपन मैथिल समाजमे

गारिजोगर रिस्ते होइत अछि आ चौल-मजाकक परम्परा लोकक दिनचर्यामे अबैछ । गारि आ उहकन लोकगीतक एकटा नीक विधा अछि जेकरा गाबि लोक आनन्दित होइत अछि । ऐ मामिलामे मिथिला बहुत आगू अछि । चारित्रिक आदर्श अपनासबके संस्कृतिमे देवीयो देवतासबस' ग्रहण करैत आएल अछि आ शिव, सती, राम, सीता, कृष्ण, जनक, दशरथ सुनयना, कौशल्या सम्बन्ध वाचक नाम अछि । मिथिलामे पुतके जनम होउक वा विवाह, ओ रामेके भेल करैत अछि । कतहु ककरो केहनो बेठा ओहि शुभ मांगलिक कालमे रामे आ बेटी सीते रहैत अछि आ सीतेरामके ना धराक' शुभ विवाहक गीत विध कएल जाइत अछि । ओहू कालमे विभिन्न हँसी मजाकक गीत आ चौल, गारिक व्यवहार कएल जाइत अछि । ई बात लोके धरि सिमित रहैत अछि सेहो नइ, महादवो धरि लोक लुलु-थुथु क' नकमाइन क' कए दैत अछि । एहन महेशवाणी नचारी सबस' मैथिली गीत संसार भरल अछि । एहन एहन चौलमजाक लोक खुल्ला दिलस' करैत अछि आ ई बात मनमैल पाप नै रहने लोकके, जेकरा कहै छै तेकरो नीके लगै छै । चौल मजाकस' श्रद्धा, स्नेह आ अपनत्वक भाव उनटे बढवे करैत अछि,

वाँकी अन्तिम पृष्ठ पर

प्रकाशक : **कुमार भास्कर**
सम्पादक : **प्रा. परमेश्वर कापडि**
सहसम्पादक **कैलास दास**
कार्यालय : जनकपुरधाम-१६, पुलचौक
फोन नं.: ०४१-५२४९५२
मो.नं. : ९८४४०२२५९४,
: ९८४४०५३९७३
: ९८४४१००१६४
ईमेल : **dhuahaja@yahoo.com**
मुद्रक: **त्रिवेद अफसेट प्रेस**
जनकपुरधाम, फोन नं.: ०४१-५२२५९०



सम्पादकीय

लाज अछि त' एतिहासिक गलती करबै नै करू

ऐतिहासिक गल्तीस’ राष्ट्रियता देखार-चिन्हार भइए जाइछ आ इतिहास पाठ शिखबैछै जे मरितो दम धरि एहन गलती अुलियोक’ नै करी । नेपालक सम्बन्धमे भारतक एस डी मुनी आ पूर्व भारतीय राजदूत श्याम शरणके टिप्पणीस’ एखन किछु राष्ट्रवादी देशभक्तसबके वेदमे छेद जकाँ ईबात कटकटाक’ लागि रहल छै । ओसब जतेक बातसब कएने अछि ओसब नेपालक ऐतिहासिक आ राजनैतिक विशिष्टतास’ सम्बद्ध अछि । सब दिनस’ ताबाचटकल नेपालके सहायक रहल भारतस’ काज लेब’ बेरमे जे बात मित्र परोशी देशक सहयोग आ सदासयता भरल सहायताके बात छलै ओएह आइ शर्मके कर्म लागि रहल अछि । आइ आव ओकरा ओहिना मर्पने, खोँमएने नै मेटाओल जा सकैछ । तहिया एमाओवादी वाह्य हस्तक्षेपके मुट्ठा बना, अपन दलगत अभियानके रुपमे पूर्वमे मेचीस’ ल’क’ पच्छिममे महाकाली धरि बतनावान्हि, जोडेठोठे भारत विरोधी अभियान जे चलौने रहै, तहिया राष्ट्रभक्तसबके काने नै ठाढ़ भेलै वा दोहाइ प्रभु ब्रह्म बाबा भारत सोफा बकारे नै फुटल रहै वा गुपचुपे रहने सर्वसिद्धक अभिवृद्धि हुअ’बला रहै आ कि किछु आने बात रहै से के कहत ? आइ ओकर शब्द बुन्नेपर अनेरे बवाल कचाब’स’ नीक जे अपन इतिहासके साक्ष्य हंथोरैथ ।

नेपालक राजनीति एखन मूल्यहीन अराजकता आ भ्रष्टाचारिताक खुरपेरिया भूत डगहर धएने सनके आरोप लागि रहल अछि । कहल जाइछै जे देशक नेतासब एखन ने कोनो ठोस राजनैतिक निर्णयक क्षमता रखने अछि, आ ने चलाब’-बनाब’के हुवा-हिआओए रखने अछि, जेकरा चलते नान्हियोटा बातमे, छोटीछिन राजनैतिक ओम्फरी, ओटमे विदेशीए दादाके मुहतक्कीमे औरही-धै कटैत रहैत अछि जे हया दैव छुलकले छोलेपर आव’ आ ऐ राजनैतिक थल्लास’ उबारह । २००७ सालमे राजा त्रिभुवन शाण शासकस’ चोरा-नुकाक’ भारतीय राजदूतावासक शरणमे गेल रहै आ तहिया ई बड़कीटाके राजनैतिक घोलघमर्थनके विषय बनल रहै । राजा विशेष व्यवस्थासश्च दिल्लीयो गेलैथ आ बदलल राजैतिक परिवेशमे हलसल नेपाल घुरल रहथि से की ओहिना मुनले मुहें आ कि किछु बात व्यवस्था कएने, भेल छलै होइत ? ई बात नेपालस’ बेसी भारते जनैत अछि ? बात २०३६,२०४६ वा २०६२/०६३क जनआन्दोलनक हुअओ वा माओवादी द्वन्दकालक वा प्रतिगमनी ज्ञानेन्द्र कालक, भारत सब दिन सब ठाम रहबे कएल अछि । राजदरवार हत्याकाण्डके लोक जानि-बान्हिक’ बिसरि रहल अछि, आ जहिया एकर प्रमाणिक इतिहास लिखल जएतै, ओकरा की कहल जएतै ? मिथिलाराज संघर्ष समितिक आन्दोलनमे, रामानन्द चौकमे, शान्तिपूर्ण धरणाकालमे भेल भयंकर त्रासद बमकाण्ड ओहिना नै भेल रहै ! निश्चित रुपस’ ओहिमे शक्तिशाली देशी-विदेशी शक्तिक हाथ रहै, तेकरा स’ जे सरकार डरे मुंह मोड़ि, घरफोड़ि फगडा कहि, चुप्पी साधि गबदि जे मारि बैसल अछि ओहो निरधिन काण्ड एकदिन छप्पड़ चढ़ि डिरियाक’, संलग्न लोकक सातो पुस्ताके मुहरपर लोइयाक लोइया थूक धरबे करत !

समसामयिक सन्दर्भमे:-

जनकपुरक पत्रकारिता आ एकर प्रवृति

बी. एम. खनाल

केन्द्रीय पार्षद, नेपाल पत्रकार महासंघ

पृष्ठभूमि:-

नेपालमे प्रकाशन युगक प्रारम्भ युवा कवि मोतिराम भट्टस' भेल मानल जाइछ । वि.सं १९४३मे 'गोरखा-भारत जीवन' बनारसस' नेपालमे प्रवेश कएने होइतो, १९५० सालमे काठमाण्डौमे पाशुपत छापाखानक स्थापनाक संगहि १९५५ सालमे 'सुधासागर' मासिकक प्रकाशन आ १९५८ साल जेठ ३ स' शुरु भेल 'गोर्खापत्र' साप्ताहिकक सरकारी प्रकाशनके पत्रकारिताक प्रारम्भिक इतिहास संग जोड़ि देखल जाइछ । १९९१ सालमे 'शारदा' मासिकक प्रकाशनक बाद नेपालक साहित्यकार, लेखक एवं कलमजीवि लोकनिक पत्रकारिताक क्षेत्र प्रति जिज्ञासा बढ़ैत गेने नेपालक छापा पत्रकारिता साहित्य, राजनीति आ सामाजिक चेतनाक विविध पक्षसबमे विकसित आ समृद्ध होइत आजुक स्थिति धरि पहुँचल अछि ।

जागरण काल:-

जनकपुरक पत्रकारिताक चर्चा वि.सं. २००५ स' २००९ धरिमे राजनैतिक क्षेत्रमे रहल नेपाली नागरिक लोकनि द्वारा छिटफूट रुपमे प्रकाशित 'सातदिन' 'मुक्त नेपाल' सन पत्रिकासब अभिव्यक्तिक माध्यमक रुपमे प्रयोग भेनहुँ ईसब सीमावर्ती भारतीय भूमिमे मुद्रण होइत छल । निर्वासित आ जेल जीवन व्यतित कए रहल सचेत बौद्धिक राजनैतिक व्यक्ति लोकनिक अपन वेदना आ शासक वगैक अत्याचार प्रति लक्षित कए, ओहि प्रकाशनमे अपन रचना प्रस्तुत कएल गेल देखल जाइछ ।

वि.सं. २०१२ सालमे स्व. विश्वनाथ गुप्ताक जनकपुरक पहिल मुद्रण संस्थाक रुपमे अम्बिका प्रेसक स्थापनाक बाद २०१३ सालमे पं.श्रीकृष्ण मिश्र 'जनकपुरधाम' नामक समसामयिक संग्रह आ २०१४ सालमे नवोनाथ भा 'नवजागरण' मासिक मुखपत्रक रुपमे प्रकाशित भेल अछि । ओहि कालमे शिक्षित व्यक्तिलोकनिमे मेघप्रसाद उपाध्याय, रामस्वरुप प्रसाद, पं.सूर्यकान्त भा, लोकराम पाण्डे, रामभद्र लाल आदिक संलग्नतामे भेल ई प्रयास २०१६चैत धरि रहल अछि ।

उपरोक्त कालखण्डक सब प्रकाशनसब छिटफूट रुपमे रहि बन्द भेलाक कारणे वि.सं.२००५ स' २०१६ धरिक जनकपुरक पत्रकारिताके प्रारम्भिक चरणक रुपमे राखि जागरण काल कहब उचित होएत ।

प्रारम्भिक काल:-

वि.सं.२०१७ सालक राजनीतिक परिवर्तनक बाद स्थापित निर्दलीय पंचायती व्यवस्था पहिल बेर राष्ट्रभाषा नेपालीमे प्रकाशनक अनुमति देलाक बाद २०१८ साल कार्तिक११ गतेस' रमेश घिमिरेक सम्पादन आ प्रकाशनमे 'धनुषा साप्ताहिक' म.स.गो.द.नं.- १ अन्तर्गत सरकारी दर्ता भ' नियमित पत्रकारिताक प्रारम्भ हुअ लागल ।

जनकपुरक पहिल साप्ताहिक 'धनुषा'क बाद २०२० भाद्र १स' पाण्डवराज घिमिरेक प्रकाशन आ लेखनाथ शर्मा एवं कुलदीप प्रसाद कुमुदकसम्पादन प्रकाशनमे ज्योति आ आनन्दप्रसाद घिमिरेक सम्पादन प्रकाशनमे 'नयां पाइलो' साप्ताहिक दोसर प्रकाशनक रुपमे जनसमक्ष आएल । एकर बाद २०२१ साल पुस १९ मे जनकपुर अंचल पंचायत लिला सिंह कर्माक सम्पादनमे 'अञ्चल सन्देश' साप्ताहिक प्रकाशनमे आएल, जे अंचल पंचायतक खारेजीक सङे बन्द भ' गेल । २०२२ साल पुसमे पं. ताराप्रसाद उपाध्यायक प्रकाशन आ माधव प्रसाद उपाध्यायक सम्पादनमे पहिल साहित्यिक पत्रिकाक रुपमे किछु अंकक प्रकाशनक बाद धर्मबहादुर सिंह द्वारा माधव आचार्यस' नामसारी करा २०२२ फागुनस' 'आकाँक्षा' त्रैमासिकक प्रारम्भ भेल । २०२४ साल भादो २५ गते माधवे आचार्यक सम्पादनमे 'जन आकाँक्षा' साप्ताहिक आ २०२६ फागुन ७ स' श्याम गिरीक सम्पादन-प्रकाशनमे 'वैदेही साप्ताहिक' प्रकाशित हुअ लागल । २०२७ सालमे धनुषा जिल्ला पंचायतक प्रकाशन आ

सुरेन्द्र पुरी सुमनक सम्पादनमे 'पञ्चवाणी' कुलदीप प्रसाद कुमुदक सम्पादन प्रकाशनमे 'दि टाइम्स औफ हिमालय' हाल 'हिमालयन टाइम्स'क रुपमे प्रकाशित भ' रहल अछि । ओही कालमे अञ्चल समितिद्वारा रामस्वरुप बी.ए.क सम्पादनमे प्रकाशित जानकी साप्ताहिक मदनलाल श्रेष्ठक सम्पादन-प्रकाशनमे अखनहुँ जारीए अछि ।

वि.सं. २०१८ सालस' २०२७ साल धरिमे प्रकाशित कूल आठटा साप्ताहिक पत्र-पत्रिका सबमे क्रमशः धनुषा, नयां पाइलो, जन आकाँक्षा, वैदेही, पंचवाणि,ज्योति, हिमालय टाइम्स, आ जानकीए नियमित आ आधिकारिक प्रकाशनक रुपमे रहल अछि । वास्तवमे राज्यद्वारा मान्यता प्राप्त पत्रकारिताके आधार मानल जाय त' जनकपुरक पत्रपत्रिकाक प्रारम्भिक कालो इएह अछि । एहि कालक पत्रकार सबमे रमेश घिमिरे, लिलासिंह कर्मा, माधव आचार्य, लेखनाथ शर्मा, कुलदीप कुमुद, आनन्द प्रसाद घिमिरे, राजेश्वर नेपाली,चन्देश्वर गिरी, मेघ प्रसाद उपाध्याय,डा. धीरेश्वर भा धीरेन्द्र, किशोर नेपाल, पद्मप्रकाश पुरी, हरिहर विरही, पारसनाथ गुप्ता, सुरेन्द्र पुरी सुमन, रामस्वरुप प्रसाद बी.ए., सुन्दर भा शास्त्री, मदन लाल श्रेष्ठ आदिके लेल जा सकैछ ।

माध्यमिक काल:-

वि.सं. २०२७ सालक बाद सरकारी क्षेत्रस प्रकाशन अनुमति रोक हटएलाक एक दशक धरि जनकपुरक पत्रकारिता सामयिक संग्रह आ मुखपत्र सबहक प्रकाशन दिस केन्द्रित हुअ लागल देखल जाइछ । छापाखाना तथा प्रकाशन नियमावली २०३९ जारी हुअस' पहिने धरि आठटा साप्ताहिकमेस' अधिकांश रानीतिक आस्थाक कारणे प्रतिबन्धित आ कार्यवाहीमे पड़' जे लागल, त' नयां पत्रिका दर्ता कए प्रकाशन करबाक कार्ये शुरु नै भ' सकल । एहि बीच प्रकाशराज काफ्लेक सम्पादनमे 'प्राची' निरबहादुर कार्कीक 'विक्रान्त' समीर घिमिरेक सरिता, लक्ष्मण खरेलक आँखा, हरिभक्त पोखरेलक पुषाञ्जलि,अशोक रौनियारक सम्पादनमे सन्मार्ग, रामभरोस कापड़ि भ्रमरक सम्पादनमे अर्चना, नामक समसामयिक संग्रह प्रकाशित भेल त' रा.रा.ब.क्याम्पस युनियनक जागृति याज्ञवल्क्य संस्कृत महाविद्यालयक याज्ञक्क्य ल.ना. संविद्यालय मटिहानीक पूर्णिमा,रा.रा.ब. क्याम्पसक शिरध्वज, जनकपुर कला परिषदक सारंगी आ मैथिली साहित्य परिषदक मैथिली सामयिक संग्रह प्रकाशित भेल ।

वि.सं. २०३७ क जनमत संग्रहक बाद सुधारल पंचायती व्यवस्थाद्वारा जारी प्रकाशन अनुमति खुल्ला कएलाक बाद पत्र-पत्रिकाक संख्यामे एकाएकवृद्धि भेल । २०३९ स' २०४५ धरि दर्ता भेल पत्रपत्रिका सबमे राजेश्वर नेपालीक सम्पादनमे लोकमत, रामप्रकाश साहक लोकपुकार, रामभरोस कापड़ि भ्रमरक गामघर, बालकृष्ण प्रसादक युग सन्देश, माधव घिमिरेक जन सन्देश, सुशील धिमिरेक नेपाल पुकार, अशोक रौनियारक पिपुल्स वीकली, शंकर लाल श्रेष्ठक द थर्ड आई, दिलिप धिमिरेक हिम ज्योति, राजकुमार गुप्ताक जन कल्याण मंच, लक्ष्मण खरेलक जनचर्चा, मुरलीप्रसाद उपाध्यायक जनकपुर टाइम्स, बलराम खरेलक जनक, विनय कुमार भाक जनकपुर सन्देश, माधव बहादुर थापाक नेपाल, विष्णु मणि खनालक विदेह, नारायण घिमिरेक प्रकाश, यदुवंश भाक प्रभात, तोरण कुमार कार्कीक स्थिति, आ श्रवण कुमार शाहक सम्पादनमे सागर साप्ताहिक रहल अछि, त' श्रीमती पद्मा घिमिरेक नवयुग अञ्जु गिरीक जनशक्ति पुष्पलता देवी साहक पुष्प, कुलराज घिमिरेक सिंहवलोकन, रामनाराण कापड़िक अञ्जुली, माधव घिमिरेक वाणी, रञ्जु घिमिरेक विजया, भरत प्रसाद अधिकारीक राष्ट्रियता आ ज.चु.का.क मुखपत्र देउराली, सन पाक्षिक मासिक पत्रपत्रिकासब थपाएलक संगहि इएह पत्रिका बाँकी पृष्ठ ५ पर

ओ जे कएलनि

E-mail

dhuahaja@yahoo.com

अहाँ नै कहबै त’ लोक बुझतै गमतै केना ? अखैनतो जे मुहजाब लगाक’ गुम्मी सधनो, ठौंसा वेड फुलल बैसल रहबै त’ बदिअल-बहसल विन विचारीसब उदाम बनल बलधौसी बलपेली कैरते रहत ! एकरा रोक’ टोक’ आ सैर-साबतु कर’के लेल संचारी बनू आ सोभे निशंक भ’क’ E-mail करु !

अहा बिजली बला सबके कैला नै किछ कहैछिऐ, ओकरे किछु कहियौ, अखने जे अतेक लोडसेटिक होइहै त अगा जा’ क’ जड़ा महिनामे कि करतै । सब दिन एहने रहैथ आब बुझाइय जेना बिना लोडसेडिङ के कोनो दिन नै रहतै ।

- नरेश महतो, सबैला

हम ई पत्रिका कहिनो क’ किनक’ लबैछि आ अपन घरके सब धिया-पूताके इ पढ़ला’ दैछी, किएक त अहि पत्रिका अपन मिथिला संस्कृतिके फलकबैत अछि । तहि लेल हम ओकरा सब के पढ़ब’बै छी ।

- सुमित भा, जनकपुर

ई पत्रिका जे अपने निकालैत छि से हमरा निक अइ दुआरे लगैथ जे अहिमे पुरना-पुरना शब्द सबके पढ़िक पुरना दिन सब मोन पड़ि जाइय ।


- महेश ठाकुर, विद्यार्थी

मैथिली कवि-गोष्ठी काव्य चौपाड़ि

मिति २०६२/९/१६ गतेप्रा.परमेश्वर कापड़िक संयोजन एवं श्रीरामानन्द युवा क्लव,जनकपुरधामक अध्यक्ष जीवनाथ चौधरीक आयोजनमे, मैथिली काव्य लेखनके उच्च मूल्यांकन करैत, एकर रचनाधर्मिताके प्रवर्द्धन एवं समीक्षावृतिके प्रात्साहन हेतु श्रीरामानन्द युवा क्लवमे महिनाक प्रत्येक अन्तिम शनिक’ संचालित होइत आएल आ लगभग चारि बरख धरि निरंतर चलल । बीच-बीचमे किछु दिनक गोष्ठी भोरो गेल आ किछुके रेकर्डस नहियो भेटल अछि । कवि गोष्ठीमे पठित कवितासब शुरुमे सोलह अंक धरि परमेश्वर कापड़िक सम्पादनमे, **काव्य चौपाड़ि** मासिक पत्रिकामे प्रकाशितो भेल अछि आ कवितामे आएल समीक्षा आ सम्पादकी ऐतिहासिक मूल्यक आ अनुसन्धान परक अछि । ताहि मासिक मैथिली कवि-गोष्ठी **काव्य चौपाड़ि**क संक्षिप्त विवरण :-

सि.नं.	मिति	अध्यक्षता	प्रमुख अतिथि	काव्य-चौपड़िक अपन कवि-कवियत्री आ आयोजक संयोजकलोकनि –		
०१ .	२०६२/९/१६	परमेश्वर कापड़ि	डा. सुरेन्द्र लाभ	अशोक दत्त,	देव नारायण गुप्ता(सहयोगी),	वृषेशचन्द्र लाल
०२	२०६२/१०/२९	शीतल भा	दिगम्बर भा दिनमणि	अखिलेश कुमार कर्ण,	देव नारायण,	डा.रमानन्दभा रमण(भारत),
०३	२०६२/११/२७	रामचन्द्र मल्लिक	हिमांशु चौधरी	अतुलेश्वर भा(भारत),	देवेश्वर लाल कर्ण मुन्ना,	रमेश रंजन,
०४	०६३/१/८/६	परमेश्वर कापड़ि	– (निरंकुशता विरुद्धक दोसर जनान्दोलन समर्पित,जनकचौकमे खुल्ला कविगोष्ठी)	अनरुद्ध साह,	धर्मेन्द्र कर्ण,	रमेश कुमार दत्त,
०५	२०६३/१/३०	कृष्णचन्द्र मिश्र	वृषेशचन्द्र लाल	अमर कान्त अमर,	धमेन्द्र कुमार भा,	रमापति नाथ भा,
०७	२०६३/३/३१	प्रेम विदेह ललन	विजय भा मस्त	अमर नाथ साकी,	धर्मेन्द्र कुमार यादव,	रतिश ठाकुर,
०८	२०६३/४/२७	किसलय कृष्ण,भारत	डा.रमानन्द भा रमण	अमर कान्त भा,	धर्मेन्द्र भा मैथिल	राकेश कुमार साह,
०९	२०६३/५/३१	रामचन्द्र मल्लिक	प्रेम विदेह ललन	अरविन्द कुमार भा,	धर्मेन्द्र विह्वल	राजू यदुवंशी,
१२	२०६३/९/६	रुपा भा	चन्द्रशेखर लाल शेखर	अरविन्द कुमार साह,	,धीरेन्द्र प्रेमर्षि,	राजू भा मरइ
१३	२०६३/९/२९	ओम कुमार भा	(सगर राति दिप जरय, रामानन्द.युवा क्लव)	अशोक कु.महतो(भारत),	नरेश ठाकुर,	,राजेन्द्र लाल ललन
१४	२०६३/१०/२४	परमेश्वर कापड़ि	प्रेम विदेह ललन	ओम कुमार भा,	नवीन कुमार मिश्र,	डा.राजेन्द्र विमल
१५	२०६३/११/२६	निमिष भा	चन्द्रशेखर लाल शेखर	अंजली भा,	डा.नवो ना. ठाकुर,	,राजेन्द्र भा,
१६	२०६३/१२/२५	युगल किशोर लाल	(कवि चन्द्रशेखर लालक सम्मानमे)	इन्दु भा,इन्द्रेश चौधरी,	निकेश राय,	राजेश कुमार कर्ण(संचारकर्मी),
१७	२०६४/१/२९	देवेश्वर लाल मुन्ना	रुद्र ना. भा मरइ, विशेष.अतिथि डा.	इन्द्रेश कुमार मिश्र,	निमिष लाल कर्ण,	रामअशीष यादव(संचारकर्मी),
१९	२०६४/४/२६	विजय कुमार दत्त	सुरेन्द्र लाभ (बिन्धी गाममे)	उदित नारायण ठाकुर,	नित्यानन्द मण्डल(संचारकर्मी),	रामअशीष चौधरी,
२०	२०६४/५/२९	रामरतन यादव	(मधेश आन्दोलनक क्रममे,	प्रा. कन्चन भा,	निमिष भा,	रामईश्वर यादव,
२२	२०६४/७/२३	रुद्र ना. भा मरइ	जानकी मन्दिरक प्राङ्गनमे)	कमल किशोर मिश्र(भारत),	परमेश्वर कापड़ि (संयोजक),	राम उदगार यादव,
२३	२०६४/७/२	वृषेशचन्द्र लाल	रामस्वार्थ ठाकुर	कमल गोंसाइ कवीर संत,	डा.पशुपति नाथ भा,	डा.रामकुमार यादव,
२५	२०६४/९/२८	विजय दत्त	डा. राम कुमार यादव	काशीकान्त भा,	पूनम भा,	रामचन्द्र पण्डित,
२६	२०६४/१०/२६	देव ना. साह	जानकीशरण कंठ	किरण कुमार राजन्,	पूनम चौधरी,	रामचन्द्र मल्लिक,
२७	२०६४/११/२	परमेश्वर कापड़ि	जय ना. फा जिज्ञासु	के.एन्. टैगोर लव,	प्रमिला मिश्र,	रामनरेश ठाकुर,
२८	२०६४/१२/३०	डा. रेवतीरमण लाल	ई. युगल किशोर लाभ	किसलय कृष्ण(सहर्सा),	प्रदीप बिहारी(भारत) ,	राम भरत साह,
३०	२०६५/१/२८	महेन्द्र कुमार मिश्र	डा. राजेन्द्र विमल	कौशलेन्द्र लाल कर्ण,	प्रेम विदेह ललन,	राम रतन यादव देउरी,
३१	२०६५/२/३२	प्रेम विदेह ललन	डा. रेवती रमण लाल	कृश कुमार साह,	फुलचन भा,	रामस्वार्थ ठाकुर,
३२	२०६५/३/२८	पूनम भा	रुद्र ना. भा मरइ	कृष्ण चन्द्र मिश्र,	फुलचन मुखिया,	रीतेश कुमार साह,
३३	२०६५/४/३२	रामस्वार्थ ठाकुर गान्धी	डा. रेवती रमण लाल	कृष्ण देव महतो,	बुद्धिनाथ पाठक,	रुपा भा
३४	२०६५/५/२९	राम रतन यादव	महेन्द्र कुमार मिश्र	कंदर्प नारायण लाल,	बृज कुमार यादव(संचारकर्मी),	रुद्र ना.भा मरइ,
३५	२०६५/६/२५	प्रमिला मिश्र	डा. सुरेन्द्र लाभ	खगेन्द्र दाहाल विजलपुरे,	वैद्यनाथ महेट,	डा.रेवती रमण लाल,
३६	२०६५/७/३०	सुनिलकु.मल्लिक	महेन्द्र कुमार मिश्र	प्रा.गीतारानी भा,	वैद्यनाथ पटेल,	रोशन जनकपुरी,
३७	२०६५/८/२८	जय शंकर नाथ भा	प्रेम विदेह ललन	गोविन्द दिक्षित,	विल्दु चौधरी सुबन्धु कवि,	रोशन मण्डल गायक,
३८	२०६५/१०/२५	देवेश्वर लाल मुन्ना	युगल किशोर लाभ	गौरभ गोपाल भारद्वाज,	महेन्द्र कुमार मिश्र	रजीत कुमार साह,
३९	२०६५/११/२४	परमेश्वर कापड़ि	डा.राजेन्द्र विमल	गौरी शंकर दास,	,मणि कु.चौधरी,	रंजु भा,
४१	२०६६/२/ ३०	ई.युगल किशोर लाभ	रोशन जनकपुरी	गृष्म रोशन,	महेश भा,	लक्ष्मण यादव,
४२	२०६६/३/ २७	विनोदानन्द फा	युगल किशोर लाल	घनश्याम मिश्र(रंगकर्मी),	माधव आचार्य,	शम्भु नाथ भा निदोषी,
४३	२०६६/५/६	डा. राजेन्द्र विमल	धर्मेन्द्र फा विह्वल	चन्द्रेश(भारत,	मीनाक्षी भा,	शशि भूषण भा,
४४	२०६६६/२७	विजय दत्त मणि	प्रमिला मिश्र	चन्द शेखर लाल शेखर(लहान)	मोहन भा,	श्याम मोहन लाल दास,
४५	२०६६/७/२६	काशीकान्त फा	महेश फा	चन्द्रकान्त भा,	मनोज भा मुक्ति(काठमाण्डू),	शत्रुघ्न मुखिया,
४६	२०६६/८/२७	परमेश्वर कापड़ि	डा. राजेन्द्र विमल पिड़ारीचौकमे,	चन्दन कुमार साह,	मुकेश भा,	शीतल भा
४७	२०६९/ ८/११ परमेश्वर कापड़ि		मिथिलाराजके पक्षमे सड़कजाम कविगोष्ठी)	चुनचुन मिश्र(रहिका),	मुकेश मिश्र,	शीतल कर्ण,
			संजय कुमार मिश्र	जनक किशोर भा,	मुकेश कुमार लाल सागर,	शुभचन्द्र,
				जनक पोखेल,	मुकेश कु.यादव,	सच्चिदानन्द लाल कर्ण,
				जय ना.फा जिज्ञासु,	डा. भोगेन्द्र भा व्यथित,	सन्तोष कुमार सिंह,
				जय शंकर नाथ भा,	व.अ.युगल किशोर लाल,	सुजीत कुमार भा,
				जयचन्द्र मिश्र(ज.न.पा.),	ई.युगल किशोर लाभ,	सुदर्शन लाल कर्ण,
				जानकीशरण कण्ठ,	विनित ठाकुर,	सुदीप कुमार भा,
				जीवनाथ चौधरी(आयोजक),	विनोद साह,	सुधाकर भा,
				जीतेन्द्र भा(संचारकर्मी),	प्रा.विजयकुमार दत्त	सुधीर चन्द्र आचार्य,
				जीतेन्द्र मिश्र,	विजय दत्त मणि,	सुनिल मल्लिक,
				जीतेन्द्र कु.साह,	विजय कुमार भा,	डा.सुरेन्द्र लाभ,
				जीतेन्द्र कु. तिवारी,	विजेता चौधरी प्रियवर्त्त,	सुरज ना. यादव,
				तुलाकान्त लाल कर्ण,	विजय भा मस्त,	सूर्य नाथ भा,
				डा.दमन कुमार भा(भारत),	विजय कुमार मण्डल,	स्वदेश कुमार भा,
				दिगम्बर भा दिनमणि,	विजय कुमार जायसवाल,	हिमांशु चौधरी,
				दिगम्बर भा शशि,	विप्लव कुमार कर्ण विद्रोही,	हेमन्त कु.ठाकुर,
				दिगम्बर भा,	विनोदानन्द भा,	श्रवण फामैथिल,
				दिपेश मल्लिक,	विश्वनाथ भा,	श्रवण रंगरसिया,
				दिपेन्द्र मण्डल,	वीरेन्द्र प्रसाद शर्मा,	
				दिपेन्द्र लाल कर्ण,	विमल प्रसाद यादव,	

कमलाक गीत	जनकपुरक धरती	विजय दत्त (मणि)
<p>१</p> <p>आँचर सँ भँपि लेल नियरान हे, चलली सलोनी सीया कमला पूजय हे । साजि साजि अंग अंग अपन अपन हे, चलि भेलि सीया सखि आनन्द मगन हे । धूप दीप माला दूभि तुलसी सुमन हे, साजि लेल डाला बीच अक्षत चन्दन हे । गावय सुमंगल गीत बाजय वाजन हे , मुदित स्नेहलता धीया मने मन हे ।</p> <p>२</p> <p>कते जन बहै मैया मैया कमलेश्वरी कते जन बहै छथि बलान ? अगम जल बहै मैया बमलेश्वरी, घुठी जले बहै छथि बलान ? कथी दए बोधबन्हि मैया कमलेश्वरी, परवा दए बोधबन्हि बलान । कथी धूप देबन्हि मैया कमलेश्वरी, कथिये धूप देबन्हि बलान ? गुगुल धूप देबन्हि मैया कमलेश्वरी, कौने फूल बोधबन्हि बलान ? चमेली फूल देबन्हि मैया कमलेश्वरी, वेली फूल देबन्हि बलान ।</p>	<p>हे हमर जनकपुरक धरती विकागेल सब चौरी चाँचर विकागेल अरती परती हे हमर जनकपुरक धरती</p> <p>वड़ अजगुत देखल एहि नगरी बाबाजी सब माछ वेचैय एहिठामक काबिल कहवैका आँखि मुनिक नाच देखैय भाई बन्धु सब दगाबाज अछि एकसर अवला की करी ? हे हमर जनकपुरक धरती</p> <p>मठ मन्दिर बदमाशक अड्डा पोखरी बनल घड़ारी बेची खाए गुठ्टीके जगहा साधु बनल बेपारी वैसल वैसल भाईराम सब परक पथार कते चरती ? हे हमर जनकपुरक धरती</p> <p>देखु नवनिर्मित सड़कपर उड़िरहल रोड़ा गरदा भ्रष्टाचारी अपना करनीपर गाल बजा' डाले परदा हारि थाकि शैइयापर सुतल जीर्ण जनकपुर की करती ? हे हमर जनकपुरक धरती</p>	<p>कहबाके अछि एहि नगरमे युगहु स' एक रेल चलैय चलब नहि अछि अवस्था ठेल ठालि बलपेल चलैय केवल नयनास' नोर बहाक हृदय वेदना की हरही । हे हमर जनकपुरक धरती</p> <p>लूट खसोट हत्या आ हिंसा लुप्त भेल अचार विचार परशासन के छत्र छावँमे पनपी रहल अछि, देहवेपार देखि तमाशा हमर जनकपुर धैरज आ कोना धरी ? हे हमर जनकपुरक धरती</p> <p>नगरपालिका औफिस आव । घुसखोरीक दोकान लगैय अहिक विकास लेल बनल वृहत्तर बुझिपड़ैछ शमसान लगैय सबटा पुत कपुत बनल अछि भवसागर इ कोना तरती ? हे हमर जनकपुरक धरती</p> <p>बड़ महान महिमा अहाके दूर देशस' लोक अवैय जाएव जनकपुर पाप हरण होयत वेद पूराण गुणगान गवैय अपन कष्ट मेटा नहि पावय दोसरके दुःख की हरती ? हे हमर जनकपुरक धरती</p>




निर्मला देवी मेमोरियल हस्पिटल



क्याम्पस चोक, जनकपुरधाम

गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवा जनकपुरमा

तपाईंको लागि एउटै छानामुनि मुटु रोग, डायबिटीज र हाई ब्लड प्रेसर सम्बन्धी सम्पूर्ण स्वास्थ्योपचार सेवाहरू:



- Complete Cardiac Check up (CCC प्याकेज जाँच)
- स्वास्थ्य परिक्षण,सल्लाह र परामर्श
- वरिष्ठ मुटु रोग विशेषज्ञद्वारा विरामी जाँच
- ECG (मुटु सम्बन्धि जाँच)
- Echocardiography (मुटुको भिडियो एक्स-रे)
- Ultrasound (भिडियो एक्स-रे)
- प्याथोलोजि जाँच (lipid profile, Cardiac Enzymes LFT, RFT, CBC, PT/INR, Sugar profile with HbA1c) का साथै मुटु सम्बन्धी सम्पूर्ण जाँच
- फार्मसी सेवा
- प्रत्येक महिना तर्भिक अन्तर्राष्ट्रिय अस्पताल काठमाण्डौबाट आउनुहुने विशेषज्ञ डाक्टरहरूद्वारा स्वास्थ्य परिक्षण सेवा
- उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाको अनुभव



अभ्यर्क

निर्मला देवी मेमोरियल हस्पिटल

क्याम्पस चोक, जनकपुरधाम-४

फोन नं. ०४१-५२२१६३

कुखुरा फार्ममा जैविक सुरक्षा (Biosecurity) का उपाय अपनाऔ

- फार्म भित्र जनावर, मुसा, चरा आदि नपस्तेगरी कुखुराको खोर निर्माण तथा व्यवस्था गर्ने ।
- फार्म वरिपरि भ्काडी, फोहर तथा पानी जम्न नदिने र चुन छर्कने ।
- कुखुराको खोरमा भित्र बाहिर गर्दा बूटलाई फुटबाथमा डुवाउने ।
- खोरभित्र पस्दा, एप्रोन वा फार्ममा काम गर्ने लुगा र बूट लगाउने ।
- फार्म भित्र पस्दा र निस्कदा साबुर पानीले राम्ररी हाथ धुने ।
- सक्रमन मुक्त गर्ने (Disinfectant) भ्कालमा पांग्रा डुबाएर वा स्प्रे गराएका गाडी मात्र फार्म परिसरमा प्रवेश गराउने ।
- खोरका भित्री भाग, दाना, पानीको भाडो र अन्य सम्पूर्ण उपकरणहरु निसंक्रमण गर्ने ।
- कुखुरा विरामी परेमा छुट्टै कोठामा राखी उपचार गर्ने ।
- बर्डफ्लू रोगको रोकथामको लागि निम्न सावधानीका उपायहरु अपनाऔ ।
- हांस र कुखुरालाई बेग्ला बेग्लै पाल्ने र जंगली चराको संसर्गमा आउन नदिने ।
- कुखुरा हांस र मानिस एउटै घरमा नबस्ने ।
- पंक्षीको सुली निश्चित स्थानमा राख्ने र कुल्चेर जथाभावी नहिड्ने ।
- विरामी कुखुरालाई बथानबाट अलग राखी उपचारको व्यवस्था गर्ने ।
- पंक्षीहरु अस्वाभाविक रुपमा विरामी भएमा वा मरेमा नजिकका पशु सेवा केन्द्र वा जिल्ला पशु सेवा कार्यालयमा खबर गर्ने ।

नोट :- बर्डफ्लु रोग फैलिएको मुलुक तथा क्षेत्रबाट जीवित पंक्षी र पंक्षी जन्य पदार्थ ल्याउदा यो रोग भित्रिन सक्छ । नेपाल सरकारले बर्डफ्लु देखा परेका मुलुक बाट उक्त पदार्थ आयात गर्न प्रतिबन्ध लगाएको छ । तसर्थ उक्त अबैध कार्य नगर्ने तथा गर्न नदिने कार्यमा कुखुरा पालन व्यवसयमा संलग्न कृषक उद्यमी, व्यवसायी, उपभोक्ता लगायत सबैले सहयोग गरिदिनु हुन अनुरोध छ ।



नेपाल सरकार
कृषि तथा सहकारी मन्त्रालय
पशु सेवा विभाग

एमियन इन्फ्लुएन्जा नियन्त्रण आयोजना

जनकपुरक पत्रकारिता

सिवमेस' किछु प्रजातन्त्र, जन भावना, चाहना, छहरा, मर्यादितमूमि, रंगमूमि नामक पत्रिकासबहक दर्ता करएलक । दैनिक पत्रिका दिस लक्ष्मण खरेल, उदयकान्त ठाकुरक आज आ श्रीमती तुलसा आचार्यक आकांक्षा सहित दूटा मात्र प्रकाशनमे रहल ।

एहि कालक अग्रज पत्रकार सबमे रामभरोस कापड़ि भ्रमर, लक्ष्मण खरेल, बलराम खरेल, रामप्रकाश साह, अशोक रौनियार, विष्णुमणि खनाल(वी.एम.) शंकर लाल श्रेष्ठ, कुलराज घिमिरे, माधव घिमिरे, माधव बहादुर थापा, दिलिप घिमिरे, सुशील घिमिरे, तोरण कार्की, रामकुमार गुप्ता, नारायण घिमिरे, बालकृष्ण प्रसाद, यदुवंश भा, महेन्द्र गिरी, गोविन्द रेग्मी, उदयकान्त ठाकुर, श्रवण कुमार साह, सन्त व्यथित आदिके लेल जा सकैछ ।

आधुनिक काल:-

जनकपुरक पत्रकारिताक आधुनिक काल २०४७ सालक राजनीतिक परिवर्तनक बाद आएल प्रजातान्त्रिक युगक संगहि प्रारम्भ होइछ। एहि कालमे पत्रपत्रिकाक दर्ता, खारेजी प्रतिबन्ध, कार्यवाहीसन कोनहुँ शासकीय समस्या आ अडचनसब नै रहने एहि कालमे प्रेस स्वतन्त्रता उपभोगक लेल सहज परिस्थितिक रुपमे लेल जा सकैछ।

वि.सं. २०४७क संविधान द्वारा प्रदान कएल गेल प्रेस स्वतन्त्रताक हकक उपयोग करबाक शिलसिलामे छापाखाना तथा प्रकाशन ऐन २०४८ बमोजिम किछु नयाँ छापाखाना सहित पत्रपत्रिका सबहक दर्ताक कक तत्काले शुरू भेल । एहि कममे धर्मेन्द्र झाक सम्पादनमे नव विचार, वृजकुमार यादवक सम्पादनमे समाचार पत्र साप्ताहिक, रविन्द्र साहक सम्पादनमे विश्व जागरण, कमल साहक सम्पादनमे खोजबिन, खेमराज शर्माक सम्पादनमे वसुधा, तुलसा दाहालक सम्पादनमे नवीनता, माधव पोखरेल 'निराशी'क नव सृजना, श्रीनारायण साहक सम्पादनमे विदेह भूमि, मिथिला विहारी यादवक साप्ताहिक सन्दर्भ, परमेश्वर कापड़िक सम्पादनमे 'आहट' त्रैमासिक, मनोहर खातीक सम्पादनमे त्रिनेत्र, प्रफुल्लराज धिमिरेक सम्पादनमे, अर्जुन क्षेत्रीक सम्पादनमे पूर्वाधार, राजेश कर्णक सम्पादनमे तहलका, नेपाल, रामानन्द युवा क्लबक विद्यापति टाइम्स, परमेश्वर कापड़िक सम्पादनमे काव्य-चौपाड़ि, आदि पत्रिकासब पछिला शाही शासनक प्रारम्भ हुअस' पहिनहि दर्ता भ' प्रकाशनमे आएल अछि । तहिना दैनिक दिस आज, आकाश, छहरा, चाहना, मर्यादित भूमि, प्रजातन्त्र, जनभावना, आरंगभूमि कए जम्मा आठटा प्रकाशनमे आएल, जाहिमध्ये आज दैनिक बाहेक आन सब किछु दिनक बाद बन्द भ' गेल ।

नयाँ एन व्‍यवसायिक पत्रकारितापर जोडुंदत, संस्थागत पत्रकारिताक विकासक मार्ग प्रशस्त कएलाक बाद, एखन धरि 'लेटर-पेस' प्रविधिमे नया आयाम थैत वृजकुमार यादवक सम्पादनमे 'जनकपुर टुडे' नामक दैनिक दर्ता भ' अफसेट प्रेसमे प्रकाशित हुअ लागल त' एहि क्रममे दैनिक प्रभात आ जनकपुर एक्सप्रेस नामक दैनिक एक्सप्रेस एकाहि संस्थामे आवद्ध भ' एक्सप्रेस-टुडे बनाएनहुँ अपनामे मिलि नहि सकने, जनमपुर-टुडे आ जनकपुर एक्सप्रेस अलग-अलग अस्तित्वमे रहि प्रकाशित भ' रहल अछि । एहि बीचमे राजेन्द्र झाक सम्पादनमे सन्ध्याकालीन दैनिक आकांक्षा दर्ता भेल ओमहर रविन्द्र साहक सम्पादनमे विश्व जागरण दैनिक सेहो औफसेट प्रेसमे प्रकाशित हुअ लागल । अशोक रौनियारक सम्पादनमे दैनिक जनकपुर सेहो प्रकाशनमे आएल अछि ।

जनकपुरक पत्रकारिताक आधुनिक कालक वर्तमान परिप्रेक्ष्य धरिमे छापा माध्यमसबमे परम्परागत लेटर-प्रेस प्रविधिमे प्रवेश कए चुकल अछि, त' पत्रपत्रिका प्रकाशनक संख्यात्मक वृद्धि निरन्तर जारीए अछि ।

संकमणकालीन पत्रकारिता:-

देशमे शाही शासन विरुद्धक राजनीतिक संधर्षक संगहि शुरु भेल संक्रमणकालिन स्थितिमे जनकपुरक पत्रकारिता एकादिस प्राविधिक क्षेत्रमे नमहर छड़पान मारने देखाइ दैछ, त' दोसरदिस पत्रकारलोकनिक विशाल जनशक्ति एहिमे अपन भूमिका खेल पाबि रहल अछि ।

शाही शासनक अन्त्यक लेल जारी आन्दोलनके संस्थागत रूपमे अगुअइ करैत सड़क प्रदर्शनमे सेहो उतरल जनकपुरक पत्रकारसब समाजमे आकर्षणक केन्द्र बन गेल । इएह प्रमुख कारण अछि जे शाही शासनक समाप्तिक संगहि आएल नयाँ लोकतान्त्रिक वातावरणमे किछु थप पत्रपत्रिकासबहक जन्म भेल, त' एफ.एम. रेडियोसबहक स्थापना दिसि विशेष ध्यान केन्द्रित भेल । उमेश साहक मिथिला ऋतु साप्ताहिक, अजय साहक शिरषा साप्ताहिक, गणेश खरेलक जन-सौगात साप्ताहिक, प्रवीण साहक मिथिलाञ्चल एक्सप्रेस, प्रभाष कर्णक युवा-जनप्रिय, ललन साहक नवयुवा जनप्रिय, दिपेश मल्लिकक सीतायन, विजय दत्तक मदर-ल्याण्ड, डि.जे. मैथिलक.... , अकुल साहक, परमेश्वर कार्पाडिक धूआ-धजा, सन्त व्यथितक बाघ-बकरी, अनिल घिमिरेक अग्नि, उपेन्द्र भगत नागवंशीक सीमाञ्चल साप्ताहिक/दैनिक, कुमार भास्करक सम्पादनक एजुकेशन संसार, अजय मिश्र (अनुरागी)क द एक्सकुलसिभ साप्ताहिक आदि प्रकाशित अछि ।

एकर अतिरिक्त दैनिकमे मिथिला डट कम, मिथिलाञ्चल विशेष, नयाँ मिथिला, तराइ-ठाइम्स, मधेश पोष्ट, आदि संक्रमणकालक उपज अछि। एहिस' पहिनिहि दर्ता भ' क' तहलका डट कम, मिथिलाञ्चल दैनिकक रुपमे प्रकाशित अछि।

एफ.एम. रेडियो सबसे रेडियो जनकपुर, जनकपुर एफ.एम.,
जानकी एफ.एम., मिथिला एफ.एम., रेडियो टुडे, मिथिलाञ्चल
एफ.एम., रेडियो मधेश संचालनमे रहल अछि।

छापा आ एफ.एम. रेडियो मिलाक' लगभग पौने दूसयक संख्यामे पत्रकार,उद्यमी एवं प्राविधिक संचारकर्मिसबहके सेहो जौड़िक' करीब तीनसय जनशक्ति जनकपुरक पत्रकारिताक क्षेत्रमे क्रियाशील रहल अछि ।

केन्द्रमे टेलीभिजन च्यानल सबहक संख्यात्मक वृद्धि संगहि किछु थप कामक जम्मेवारी पएलाक कारणे जनकपुरक नवयुवा पत्रकारलोकनि संचार उपकरण सहित सक्रिय देखाइदैत अछि । राजनीतिक संक्रमण कालक अन्त्यक संगहि जनकपुरक पत्रकारिता अपनोके संस्थागत करैत नयाँ छड़पान मारबाक उमेदमे अछि ।

एहि कालखण्डक पत्रकारसबमे निमेष कर्ण,जितेन्द्र भा,अनिल मिश्र, स्व.उमा सिंह,अजय अनुरागी,वीरेन्द्र रमण,सन्तोष सिंह कुशवाहा, ईश्वरचन्द्र भा, जगदीश साह, विजय दत्त, धिरेन्द्र भा मैथिल, आतिश मिश्र, धर्मेन्द्र भा, रोशन कुमार भा, संजीव मण्डल, सुरेश यादव, ध्रुव कुमार भा, मनिका भा, धैर्यकान्त दत्त, रिंकु मिश्र, अनामिका ठाकुर, दिपेश मल्लिक, हर्दिस खुद्दर आदिद्व्यति ।

विभिन्न कालखण्डक पत्रकारिता आ प्रवृत्तिसबकह समीक्षा:-

जनकपुरक पत्रकारिताक, माने जागरण कालस' अखन धरिक संक्रमण कालधरिक सोच आ प्रवृत्तिक समीक्षात्मक अध्ययन कएने किछु सकारात्मक आ किछु नकारात्मक प्रभाव देखाइ दैतो समग्र रूपमे भविष्य प्रति किछु आशावादी होएवाक गुञ्जाइस अवश्य अइ।

जागरणकालिन पत्रकारिता मूलतः खण्डित आ आशिक रुपमे देखाइ दैतो एकर सोंच आ सामाजिक चेतना अभिवृद्धिक लेल रचनात्मक आ एहिमे संलग्न व्यक्तिसबक सिर्जनाके सामाजिक हितके लेल अभिव्यक्त भेल मानल जाइछ । जँ एहि कालमे जन्मल पत्रपत्रिका आ शिक्षित एवं सचेत व्यक्तिक अभिव्यक्तिक माध्यमक रुपमे प्रस्तुत नइ भेने रहितए तँ जनकपुरक पत्रकारिताके प्राथमिके कालमे, नियमित पत्रकारिताके आधारशिला ठाढ़ करवाक प्रेरणा नइ प्राप्त कएने रहितए ।

विभिन्न वैचारिक धरातल, राजनैतिक सिद्धान्त, आ आस्थायिक पक्षपोषण करहुके लेलो सीमित संख्यामे देखाइदैत प्राथमिककालिन पत्रपत्रिका आ पत्रकारसब तत्कालीन समाजक जनताक आँखि खोल'मे, शासकीय अन्याय, अत्याचार विरुद्ध संघर्षक लेल प्रेरित करमे, तथा समाजमे विद्यमान विविध समस्या सबहक निरूपणक हेतुए शासक वर्गक ध्यानाकर्षित करवाक कामसब सेहो कएने अछि । व्यक्तिगत लाभ-हानिक दृष्टिए देखने, एहि कालक पत्रकारितामे राज्यसत्ताक पक्ष पोषण कए आर्थिक तथा शासकीय जिम्मेवारी, पुरस्कार आ प्रतिष्ठाक लाभ लिअ'के प्रवृत्ति किछुमे देखाइदैतो अधिकांशक रुचि जनता, समाज आ स्वतन्त्रताक पक्षमे केन्द्रित रहल मानल जा सकैछ । एहि कालक पत्रकार सबमेस' बहुतो 'गोटेके जेल-नेल भोग' पड़ल छै, राजकाज विरुद्ध मुद्दा-मामिलासब आ पत्रपत्रिका तथा छापाखाना उपरक कार्यवाहीसब सेहो एकर पुष्टि करैछ । विज्ञापनक अभाव, पत्रपत्रिका किनक' पढ़निहार पाठकक कमी, भौतिकपूर्वाधारक शून्यतास' एहि कालक पत्रकारिता संघर्षपूर्ण रहितो, विचारक दृष्टिए उच्च आ सम्मानजनक मानले जा सकइछ ।

प्राथमिक कालक समाप्तिक एक दशक धरिक पत्रकारिताके विकासमे शासक वर्गद्वारा प्रकाशनक अनुमतिक अवरोध खड़ा होइतो, अपन सृजनात्मकताके विभिन्न सामयिक संकलनक साहित्यिक माध्यम द्वारा अभिव्यक्ति करैत आगू बढ़ल मध्यमिककालिन

पत्रकारिता अपन पछिला चरणमे आबि प्रकाशनमे हुरुकद' आएल
संख्यात्मक बाढ़िक संग कछि विकृति आ विसंगतियोपूर्ण बनल
देखाइ दैछ।

पत्रकारिताक मूलमर्म, आदर्श आ सिद्धान्तके व्यवहारमे उतारि जनता, समाज, आ राष्ट्रके दिशानिर्देश करवाक उद्देश्यक संग किछु शिक्षित एवं प्रभावशाली व्यक्तित्वलोकनि शुरु-शुरुमे आगू बढ़ि कलम चलौलनि, तथापि पाछू जाक' ई सत्ता पक्षके पोषण कर' आ सिमित रुपमे किएक ने रहौक उपलब्ध विज्ञापन तथा जयगान सहितक शुभकामना सब छापि अर्थोपार्जनक माध्यमक रुपमे प्रयोग भेल देखाइदैछ। मिसन पत्रकारिताके रुपमे आगू बढ़ल एहि कालक पत्रकारिता जनता आ समाजक हितस' बेसी सत्ता आ शासकवर्गक पक्षपोषण आ गुणगान कर' दिसिअधिक संख्यामे केन्द्रित हुअ लगने ई विकृति आ विसंगतिपूर्ण बनैत गेल अछि। ओना एहि कालक किछु साहसी एवं निर्भिक पत्रकारलोकनिक सत्प्रयासस' आम जनतामे राजनीतिक चेतना भर' आ सामाजिक परिवर्तनक दिशामे अग्रसर कराव'मे पत्रकारिता क्षेत्रक उल्लेखनीय भूमिका आ योगदान रहल बातके बिसरल नइ जा' सकैछ।

संस्थागत एवं व्यवसायिक पत्रकारिता विकासक सोचक संग देखाइदैत आधुनिककालक पत्रकारिता एहिस' पहिलकु विकृति, विसंगतिके हटाक' पत्रकारलोकनिमे दक्षता अभिवृद्धि कराएब आ नव दक्षजनशक्तिक उत्पादन क' युग सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मक एवं गुणस्तरीय पत्रकारिताक हेतु प्रयत्नशील रहल अछि। एहि उद्देश्यक संग आधुनिक प्रविधि, सिप आ व्यवसायिक दक्षताकसंग देखाइदैत राजधानीस' प्रकाशित पत्रपत्रिकासबके प्रभाव स्वभाविकरूपस' जनकपुर लगायतक अन्यान्य शहरसबमे सेहो पड़ल अछि। ओना बहुत पछाति आविक' आधुनिक प्रविधिक प्रयोगक संग देखाइदैत जनकपुरक पत्रकारिता सम्पूर्ण रूपमे गुणात्मक श्रृंखला पार नहि क' सकल अछि।

पत्रिका चलाबहिके लेल वा नियमितता प्रदान करबाक हेतु कहि सहभागी कराओल गेल जनशक्तिक संख्या बढ़ि गेनहूँ। पत्रकारिता क्षेत्रस' जनता, समाज आ राष्ट्र क अपेक्षासब परिपूर्ति नहि भेल अछि। पत्रकारिताक आदर्श, मूल्य आ मान्यताके स्थापित करबास' अधिक व्यवसायिकताक नामपर व्यापार आ सौदाबाजी कए तुरन्ते अधिकस' अधिक आर्थिक लाभ हाँसिल करबाक प्रवृत्ति हावी होइत गेने एहि क्षेत्रक मान-मर्यादा, इज्जति-प्रतिष्ठा,कात लागल गेल अछि। जाहिस' एहि क्षेत्रक विभिन्न तरहक विकृति,विसंगति एवं अपराधीकरण अपन जड़ि जमौलक। पत्रकारिताक्षेत्रके आवरण बना' प्रशासनिक संयन्त्रसबस' लगलागि आ एकरे ओतमे अवैध धन्या आ कारोबार चलएबाक खेलसब सेहो हुअ' लागल। मात्र पत्रकारक रुपमे क्रियाशील आम पेशाकर्मिसबहक अवस्था दयनीय आ मुँहतक्की रहल आ समाजमे किछु धूर्त, चाटुकारसबहक बोलबाला बढ़िगेल। पत्रकारिताक नाममे चाटुकारसब उठि-बैसल। एतेक होइतो, एहि कालक पत्रकारिता क्षेत्रक प्रभाव सूचना-प्रवाह एवं जन-चेतनाक दृष्टिस' कम नइ आँकल जा' सकैछ।

आधुनिक कालक उत्तराखंडमें छापा आम संचारमें द्रुततर सूचना प्रवाहक स्थान महत्वपूर्ण बनैतगेने विगते सनके साप्ताहिक-पार्श्विक पत्रिकासबहक प्रकाशनस' दैनिक प्रकाशन दिसि ध्यान केन्द्रित हुअ लागल, जकर प्रभाव स्रकमणकालीन अवस्थापर प्रस्टे देखाइ दैतछैक ।

आवधिक समाचार-विचारके विश्लेषणकए प्रस्तुत करब
समयसन्दर्भके आवश्यक विस्तृत अध्ययन, अनुसन्धान, विश्लेषण
आ मूल्यांकनक काज बड़ भिराउ अछि, आ ओहन सामग्रीसबहक
पाठकक संख्या न्यून रहने संक्रमणकालीन पत्रकारितामे क्रियाशील
अधिकांश पत्रकारसब दैनिक प्रकाशनमे केन्द्रित रहल अछि ।



कविता

धान कट्ट धनिया ... !

रोपनी गीत

१

जेठहि बियवा गिरैलौं असाढ़हि जनमि गेल हे
साओन रोपनी करैलौं भादव बिट भेल हे
आसिन फूल भेल धान कातिक फल भेल हे
अगहन काटल धान दउनिया करायल हे
दउनि कराए कोठी ढालर कूटि-कूटि खायब हे

२

आयल चैत बैसाख रबिया के दिना जी
कटि गेल जौ मटरबा रबिया फसल जी
बोलय सासु ननदिया पीसू जोकराइ जी
मोटे-मोटे रोटी पकाबु कि सब मिलि खायब जी

समाजके विकृति

- साधना झा

मिथामे मैथिलके विकृती छाप
दहेज ल द क भरल कु संस्कार
भोज भात फजुल खर्च मे नै काबु
आडम्बर करैम सब सँ आगु
लास परल आगुमे
बात बढल पाछुमे
क्रिया कर्म भेल जना तेना
पाली परगन्ना हुज कहुना
इज्जत बचबैक य होड
ओहिमे लोगके भ जाइय आर्थिक बोझ
बेटी वयस्क नै पढवैक काम
घरक धन्धा सटल सब काम
यहा छौं बेटी तोहन कर्म
बेटा पढाएव डोनेशन देव हम
ऐहनअछि लोगक मनोवृति
समाजमे पसरल विकृती

कला.....

आ लोक जीवन शैलीके तत्व-दर्शन सहित लोक जीवनमे एकर अनिवार्यताके परिप्रक्ष्यमे करब ओतबे महत्वपूर्ण अछि।
नव नेपालक निर्माण आ संघीय संरचना विकासमे इएह भाव, तत्व प्रधान अछि। संघीय संरचनाके निमाणमे पहचानके आधार मानबाक पाछू इएह तत्व सकिय अछि। पहचानक भावबोध स्वतन्त्रताके संगे अनिवार्य अछि आ एहि दुआरे नव नेपालक संघीय संरचना विकासमे दलगत राजनीति स्वार्थक खेलौड कखनो कनिको नइ होएबाक चाही।
राजनीतिमे.....
सम्बन्ध आ परिचया आओर गाढ आ रंगीन बनेछ। होरीक सबटा राग-रंग हास्ये-विनोद स' भरल रहैत अछि। आ जनकपुरक महामूर्ख सम्मेलनमे लोकअनका त' अनका अपनोपर हँसि, हँसा लोकके स्वथ्य मनोरंजनक संग सामाजिक राजनैतिक आ सांस्कृतिक विकृतिके हँसिए हँसीमे खिल्ली उड़ा विला दोबक जतन करैत अछि। अपन नेपाली भाषी समाजमे गाईयात्रासन महत्वपूर्ण पावनिक परम्परा अपनएबाक आवश्यकता एहि दुआरे नइ पडै छै जे ई अपनासबके ओहिठाम सनातनिएस' छै आ जीवनके महत्वपूर्ण सब क्षेत्रमे।
बदलल समय सन्दर्भ आ युगीन परवर्तनके हिसाबे गाईयात्रा नेपालमे २०३३ सालस' विशुद्ध हास्य-व्यंग्यके रुपमे मनबैत आएल अछि आ राजनैतिक सामाजिक विकृति-विसंगतिके, उवानि खुटचालि आ चरित्रके खूब नीकस' धो-पोछिक', स्वच्छ आ स्वस्थय कर'के हिसाबे मना रहल अछि। रचनाधमी कवि, साहित्यकार, गीतकार, व्यंग्यकार, साहित्यकार सिने-नाट्यकर्मी आदिलोकनि बढिचढिक', बहुत उत्साह-उमंगक संग एकरा मनबैत, लोकके आनन्द प्रदान करैत हास्य-व्यंग्य विधाके बढवैत रहल अछि। साहित्य, संस्कृति आ रंगकर्मस' खूब नीकजकाँ जुड़ल एहि पवित्र पावन व्यंग्यके मादे जे मुठ्ठा आ वषय उठाओल जाइछ ओ बहुत रसगर, चोहटगर लगैत अछि। गाइयात्रामे मुख्य व्यंग्य बरखा राजनीति, राजनेता आ भ्रष्टाचारी सबपर कएल जाइत अछि। जीवनमे, समाजिक गतिशीलता आ सुधारात्मक स्वच्छताके लेल ई गाइयात्राक सान्दर्भिकता बहुत बेसी अछि आ ई नै जे रहौक त' अन्हेर, अराजकता आ मूल्यहीनता आओर मरुख भ' नडटे नचतै। विडम्बना छै जे नेपालके भड्ठल, भ्रष्ट आ बेकहल राजनीतिके चलते जनताक दुनियाँ ओहिना अन्हार छै आ कह' सून'बला कतौ केउ नै छै। एहनमे व्यंग्यक वाण बढ़का स' लक' छोटका धरि, घरस' ल'क' राजनीतिक सबटा दरबार धरि घरहुलिया छिमानि छोड़ा, उवानि आ कुचालिके, सोफे नडाम्फार देखार क', दुरछिया क' दैत अछि। एहि ठाम गाइयात्राक आवश्यकता आ प्रतिबद्धता विशिष्ट आ महत्वपूर्ण भ' जाइत अछि।
हिया....
अगहन सातमे चुनाव नै भ' सकलै से नइ, चुनावक गर, बन नै बैसा सकलै सरकार। चुनाव नै भेनेस' सरकारके औरदा घटलोमे घटि गेलै सेहे नइ, देखार-चिन्हार भ'क' नकमाइन सेहो भ' गेल उपराग विपक्षी द' रहल अछि। ई सरकार एकतरफी रटना रटि रहल अछि जे सहमतिके सरकार बनओ त' एकरे तहत आ एहि बातपर विपक्षी नाकपर माछीए नै बैस' दैछै। विपक्षी चाहै छै पाँच बुन्ने सहमतिके आधारपर अगिला सरकार कांगेसके नेतृत्वमे बनओ। ओम्हर कांग्रेस निर्णय नइ क' पावि रहल अछि जे भावी प्रधानमन्त्रीके रुपमे केकर ना अगाड़ी करी। एहि बातके अन्दाज एमाले खूब नीक जकाँ पावि गेल अछि जे कांग्रेसक हूलिमे राजनैतिक नेतृत्वक चर्खा नफा हमरे हुअओ।

एक्काइसौ शताब्दीमा नेपाल र नेपालीको समुन्नत भविष्य निर्माणको जिम्मा हामी नेपालीकै हातमा छ । त्यसैले हामीमा भएको अपार क्षमतालाई खेर नफालौं ।



नेपाल सरकार
सूचना तथा सञ्चार मन्त्रालय
सूचना विभाग



हम खाइ छी । हमर बिलाई मुह तकैए ।

अंक सोलह आ शक्तिमाता

सोलह संख्याक बड़बेसी महत्व अछि, दुर्गाजीके सोलह नामस' जानल जाइत छन्हि।
सोलहक संख्या नारीक सृजनात्मक शक्तिक चरम बिन्दुक अभिव्यक्तिक प्रतीक अछि। नारीक सौन्दर्य, लावण्य आ मुखमण्डलक तेज आ आभासभ ओहिमे निहित सृजनात्मक शक्तिक बाह्य रुपमे अभिव्यक्ति मात्र अछि। नारीक ई चरम सौंदर्य, प्रथमवेर १६ वर्षक अवस्थामे व्यक्त होइत अछि। चन्द्रमाक संगे नारीक बहुत धनिष्ठ सम्बन्ध अछि। जहिना चन्द्रमा २७ नक्षत्रक परिक्रमा कए क्षय वा वृद्धिक पश्चात् फेरु नवीन चक्र यात्रा प्रारम्भ करैत अछि, ओहिना नारी शरीर सेहो २७ चन्द्रदिनके बाद फेरु सृजन आधार ग्रहण कए नवीन चक्रक प्रारम्भ कए दैत अछि, चन्द्रमोके सोलहे कला होइत अछि।
पन्द्रह कलाक उपर जे अमृत कला सिनीवाली अछि ओ षोडसी रुपक प्रती अछि। ई सिनीवाली गहन अंधकारमे अमावस्याक हृदयमे रहैत अछि आ चन्द्रकलाक अमर्त्यताक प्रती अछि। एीह प्रकारे शुक्ल पक्षक १५ तिथिक पश्चात पूर्णिमाक पूर्णचन्द्रमा हृदयमे अनुमति नामक अमा कलाक शाश्वत निवास अछि। एहि तरहें नारीमे मृत्यु बीजो अछि आ सृजन बीज सेहो। इएह रुप कलान्तरमे कालिका त्रिपुरसुन्दरी षोडसी रुपमे पूज जाय लागल। एहि कारणे त्रिपुर सुंदरीक मन्त्र सोलह अक्षरक होइत अछि आ महाषेडश (१६+१२) अर्थात २८ वर्षमे एकवेर सृजन प्रक्रियाके पूर्ण पल्लवित करैत अछि, जाहिस ओर सौंसे अंगक कोण-कोण भरि-पूर जाइत अछि।
कृष्णजीक सोलह हजार रानीक चर्चा अवैत अछि। प्राचीन कालमे प्रमुख पूजनीय विभूतिक सहस्रनामक प्रचलन छल, जेना- विष्णुसहस्रनाम, राधासहस्र नाम आदि। सहस्र सम्मानक प्रतीक छल। श्री कृष्ण सोलह माने षेडश कलापूर्ण अवतार छलाह आ प्रत्येक कलाक संग एक नित्या शक्ति छलन्हि जे सम्मानपूर्वक षेडश सहस्र वा १६ हजार कहल जाइत छलीह जेकरा आजुक जनसाधारण १६ हजार पत्नी बुझैत अछि। १६ संस्कार, ऊँकारक १६ मात्रा, १६ मातृका, १६ दान, १६षोडशोपचार आदिक १६क एहि विशिष्टताक प्रतीक अछि।



जय माँ
वैभव लक्ष्मी